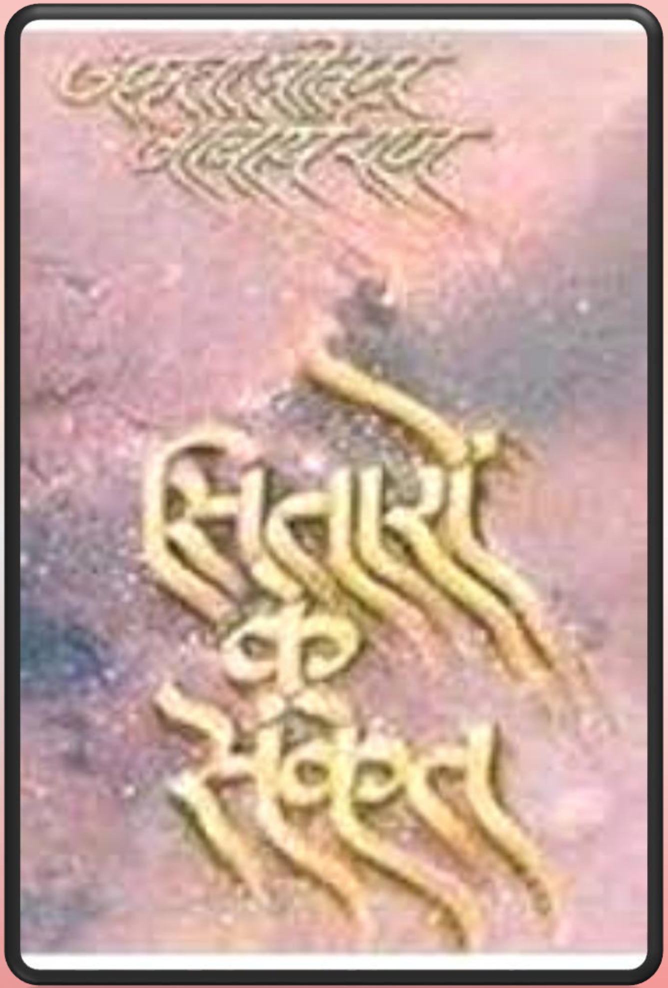

HB2997 – सितारों के संकेत

लेखक – अमृता प्रीतम

अमृता प्रीतम 20वीं सदी की प्रतिष्ठित पंजाबी और हिंदी लेखिका है। अमृता प्रीतम ने पंजाबी और हिंदी साहित्य में कई विधाओं में साहित्य का सृजन किया जिसमें कविता, कहानियां, उपन्यास, संस्मरण व आत्मकथा शामिल हैं। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में 100 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। अमृता प्रीतम को अपनी रचनाओं और साहित्य में योगदान के लिए कई पुरस्कारों जैसे साहित्य अकादमी पुरस्कार, नपीठ पुरस्कार और वर्ष 1956 में पद्मश्री से भी सम्मानित किया जा चुका हैं|

यह पुस्तक लेखिका अमृता प्रीतम द्वारा रचित कहानीयो का संकलन है। लेखिका के अपने और प्रसिध्द स्वप्न विज्ञानवेता ज्योतिशचार्य श्री राज के साथ हुए संवाद प्रस्तुत पुस्तक 'सितारों के संकेत' में दर्ज किए है |

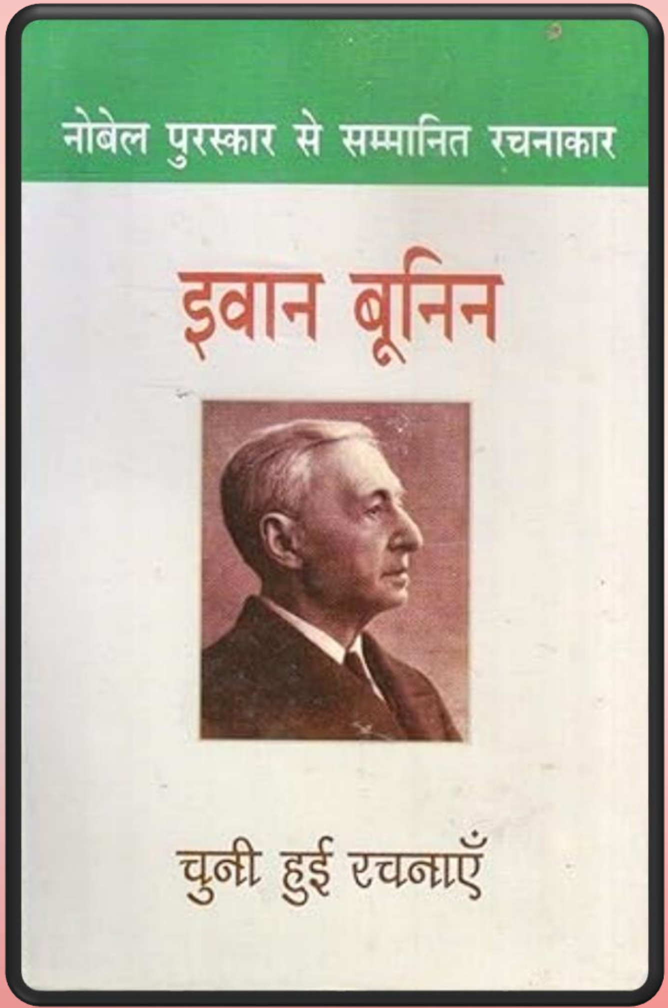

HB2986 - इवान बूनिन : चुनी हुई रचनाएँ

लेखक - इवान बूनिन

इवान बूनिन का जन्म 22 अक्तूबर 1870 को वरोनेझ नगर के निकट एक जागीरदार परिवार में हुआ था। 1933 को इवान बूनिन को नोबल पुरस्कार देने की घोषणा की गई।

इवान बूनिन ने बहुत छोटी उम्र में लिखना शुरू कर दिया था। वे निबन्ध, रेखाचित्र और कविताएँ लिखा करते थे। उनकी वही सभी प्रसिद्ध रचनाओ का ही हिन्दी भाषा में अनुवादित संकलन प्रस्तुत पुस्तक है। इस पुस्तक मे गाँव और सुखोदोल नाम का उपन्यास, बर्फ का साँड, इग्नात, तीसरा दर्जा आदि कहानियो को सामिल किया गया है।

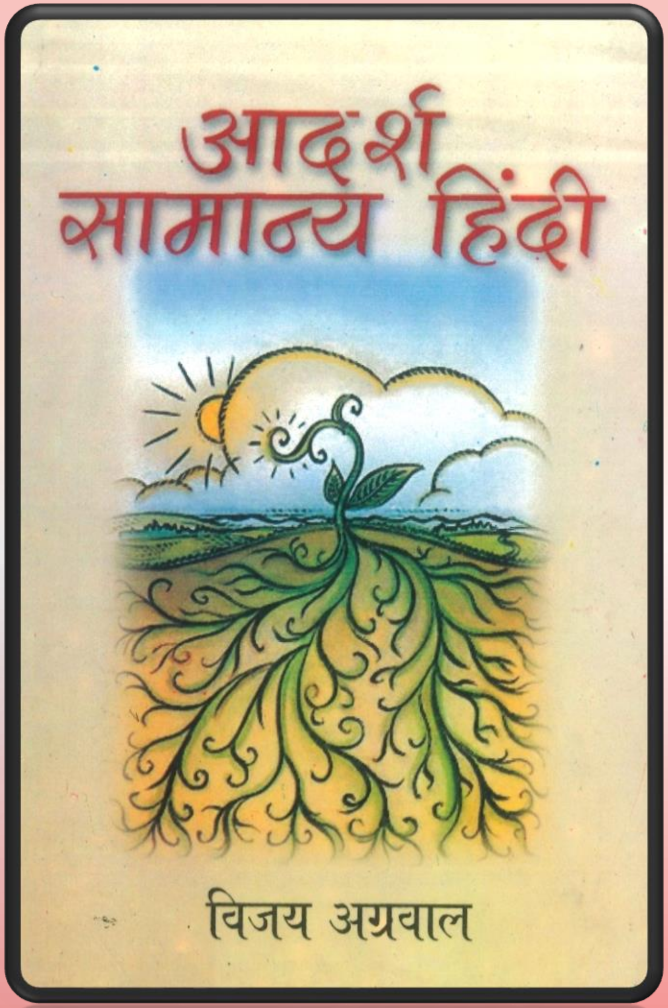

HB2969 - आदर्श सामान्य हिंदी

लेखक - विजय अग्रवाल

डॉ॰ विजय अग्रवाल का जन्म 12 अगस्त, 1957 को मध्य प्रदेश के सरगुजा जिले के चंद्रमेढ़ा गाँव में हुआ । भाषा, साहित्य, संस्कृति और सिनेमा इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। व्यंग्य पर अब तक इनका एक संकलन प्रकाशित हुआ है- 'कूड़ेदान की आत्मव्यथा'। इस संकलन को दिल्ली अकादमी, दिल्ली ने 1995-96 का 'साहित्यिक कृति' पुरस्कार प्रदान किया है।

प्रस्तुत पुस्तक न तो हिंदी के व्याकरण की पुस्तक है और न ही सामान्य हिंदी का संदर्भ-ग्रंथ । बल्कि यह सामान्य हिंदी की एक ऐसी व्यावहारिक पुस्तक है, जो इस विषय पर आपके विचारों को माँजकर उन्हें सिलसिलेवार तरीके से चमकाने का, स्पष्ट करने का काम करती है। हिंदी के शिक्षण तथा महत्त्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए श्रेष्ट किताब है।

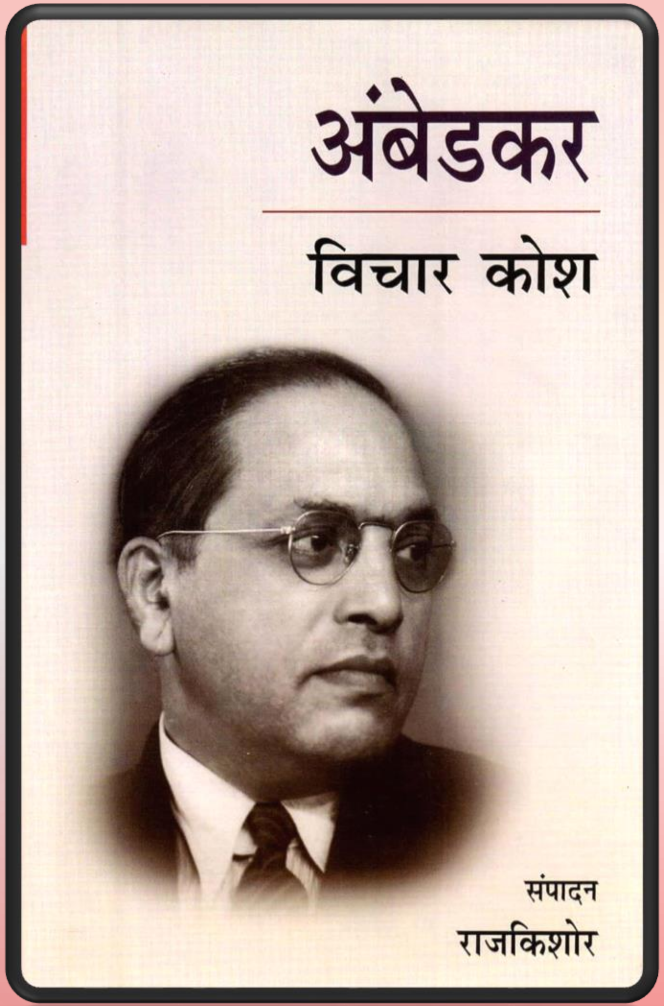

HB3009 – अंबेड़कर : विचार कोश

संपादक – राजकिशोर

हिंदी के लोकप्रिय पत्रकार और लेखक राजकिशोर का जन्म कोलकाता (1947) में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी वहीं हुई। राजकिशोर ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें से कुछ है: हिन्दी लेखक और उसका संसार, पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य, रोशनी यहाँ है, एक अ-हिंदू का घोषणापत्र, गांधी मेरे भीतर और सोचो तो संभव है।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने अंबेडकर एवं आम लोगों के बीच जीवन मूल्यों तथा विचारशैली मे छुपी भिन्नत्ता के बारे मे बात की है। डॉ. भीमराव अंबेडकर को दलितों का मसीहा कहा जाये, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। बड़े से बड़े समाज सुधारकों ने भी दलित प्रश्न को नहीं छुआ, जब कि डॉ. अंबेडकर के लिए यह जीवन-मरण का प्रश्न था। उनके उन्ही सारे कार्यों तथा विचारों के बारे मे यहाँ बात की गई है।

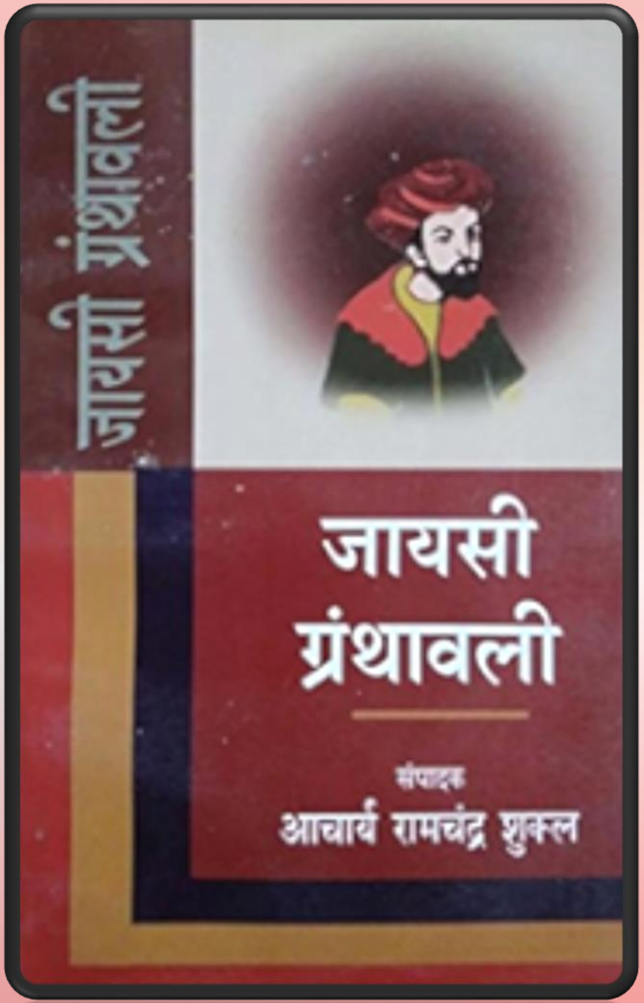

HB2985 – जायसी ग्रंथावली

संपादक – आचार्य रामचंद्र शुक्ल

शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य का पहला क्रमबद्ध इतिहास तैयार किया और साहित्यिक आलोचना की पद्धति विकसित की। कविता, नाटक, कहानी आदि सर्जनात्मक विधाओं में भी उनका उल्लेखनीय योगदान है। प्रमुख कृतियाँ : हिन्दी साहित्य का इतिहास, रस मीमांसा (सैद्धांतिक समीक्षा), गोस्वामी तुलसीदास, महाकवि सूरदास (व्यावहारिक समीक्षा), चिंतामणि : दो भाग (निबंध), विश्व प्रपंच (दर्शन), नागरी प्रचारिणी पत्रिका।

इस ग्रंथ मे रामचंद्र शुक्ल ने जायसी की प्रचलित कहानी को सूक्ष्म विवरणों की मनोहर कल्पना में परिवर्तित कर पदमावत को सुन्दर और शाश्वत काव्य का स्वरूप दिया है। विरह ताप के वेदनात्मक स्वरूप की अत्यन्त विशद व्यंजना ही जायसी की विशेषता है।